अविनाशी रंगो की अनूठी होली

होली का त्योहार विजय-उल्लास-उमंग तथा स्नेह-मिलन के पवित्र उत्सव के रूप में मनाया जाता है। सर्वविदित लोक-कथाओं एवं किंवदन्तियों कि पृष्ठभूमि में मनाएँ जाने वाले इस त्योहार के पीछे जो आध्यामिक रहस्य परमपिता परमात्मा ज्योतिबिन्दु शिव निराकार वर्तमान समय में साकार में अवतरित होकर बतला रहे हैं उसे जानकर अनुभव कर लेने पर जीवन का सारा कष्ट, अभाव एवं चिंता समाप्त होकर आत्मा सच्ची सुख शान्ति एवं सम्पन्नता के दिव्य रंगो से रंगीन हो जाता हैं। होली मुख्यतया तीन प्रकार से मनाते हैं, जिसका आध्यात्मिक रहस्य निम्न प्रकार से हैं -

1.जालाने की होली- होलिका दहन अर्थात पुराने तमोप्रधान स्वभाव संस्कार को योगग्नि में भस्म करना। होली हिन्दी वर्ष के अन्तिम मास के अनित्म दिन पूर्णिमा की अधियारी रात में जलायी जाती है। इसका भवार्थ अत्यन्त सहज है कि - परमात्मा शिव कल्यान्त के समय तमोप्रधान के अंधकार में डुबे कलियुग (चारो युगो में अंतिम युग) के अन्त के समय इस साकार मनुष्यलोक में अवतरित होकर अपने दिव्य ज्ञान और सहज राजयोग की अग्नि से मनुष्यत्माओ की तमोप्रधान वृतियो की भस्म करते हैं। काम, क्रोधादि पंच विकार रूपी सवंव्यापी आसुरी वृत्तिया जिस प्रकार आज सारे विश्व को अपने शिकंजे मे जकड चुकी है, उससे बचाने के लिए ही वर्तमान समय में परमात्मा का यह अलौकिक अवतरण हुआ है। विकर्मो के बीज को भस्म करने का कार्य ही वर्तमान समय में परमात्मा अपने ज्ञान बल और योग से कर रहे हैं अपनी वृत्ति की कमिर्यो को नष्ट करके दिव्य वृति बनाना ही अपनी सच्ची होली है।

2. रंग लगाने की होली -इसका भावार्थ है कि जो मनुष्यत्माएँ परमात्मा के इस साकारी अवतरण की सत्यता को अनुभव कर लेती हैं, उन्हें ईश्वरीय दिव्यता का पक्का रंग लग जाता है। अर्थात ईश्वर की संगत में ईश्वरीय गुण और शक्तियों कें अखुट खजाने से भरपूर होने लग जाती हैं। फिर इनके सम्मुख जो भी, जैसा व्यक्ति आता हैं। उसे भी अपनी दिव्यता के रंग से रंगीन बना देती है। आत्मिक स्नेह की पिचकारी से एक-दूसरे पर दिव्य गूणो का रंग लगाने की होली खेलने की अलौकिक कला स्वयं परमात्मा शिव इस भू पर आकर हम मनुष्यत्माओं को उस समय सिखलाते हैं जब उन्हें इस सृष्टि को स्वर्ग यानी सतयुगी बनाना होता हैं। वर्तमान समय में वही होली प्रत्येक ब्रह्माकुमार और बह्माकुमारी पुरे विश्व में खेल रहे हैं।

3. मंगल मिलन मनाने की होली, होली के दिन व्यक्ति अपने सभी पुराने वैर-भाव भुलाकर हमारा आपसी मिलन मंगलकारी एवं सुखदायक सदा तभी होगा जब हमारे में आत्मिक दिव्यता भरपुर हो। इसी अभाव के कारण आज चहुँ ओर दुःख और अशान्ति का वातावरण है। को दिव्य बनाने ही का कार्य कर रहें हैं। इसका यथार्थ अनुभव आप सम्मुख उपस्थित होकर स्वयंकर सकते हैं।

अन्ततः यही कहना चाहूँगा कि स्थूल रूप से खेली जाने वाली रंगों की यह होली एक दिन की अस्थायी खुशी भले ही दे दे परन्तु हमारे जीवन में स्थायी खुशी की रंगीन बहार नहीं ला सकती। जब तक हमें अपना स्पष्ट आत्मबोध नहीं हो जाता तब तक अपने देह और देह की स्थूल दुनियाँ में ही हम उलझे रहेंगे और हमारी बुद्धि जाति भाषा-धर्म इत्यादि के भेद-विभेद में ही फँसी रहेगी। आज की गीरावट एव दुःख का मूल कारण ही यही देह अभीमान है। इसी विनाशी देहभिमान से हमें मुक्त करके सुख शातिं की पवित्र दुनियाँ रचने का परम कार्य ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर शिव भगवान वर्तमान समय में आबू पर्वत पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्माकूमारी ईश्वरीय विश्वविध्यालय के माध्यम से कर रहे हैं। सच्ची होली पानी के रंगों से नहीं आत्मिक दिव्यता के रंग-पवित्रता,रहम, धीरज, क्षमा स्नेह धीरज, त्याग सदभवना इत्यादि से खेली जाती है। इससे जीवन में एवं संसार में सदा बहार आ जाती है। आप भी ऐसी सच्ची होली अपने पिता परमात्मा से सीखकर वर्तमान समय में खेल सकते हैं।